International Journal of New Media Studies (IJNMS), ISSN: 2394-4331
Volume 10 Issue 1, January-June, 2023, Impact Factor: 7.786

नारी अस्मिता और नानक वाणी

प्रो० संजीव कुमार

हिन्दी–विभाग
निदेशक : संत साहित्य शोध पीठ, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

शोध–पत्र–सार

गुरु नानकदेव जी महान् सन्त और विचारक थे। उनका समस्त साहित्य समाज को विकृतियों से विमुख कर संस्कृति के उदात्त शिखर पर प्रतिष्ठित करने की अदम्य शक्ति का संवाहक है। नारी के प्रति उनका सम्मान समकालीन कुत्सित, निन्दित, घृणित, संकीर्ण सोच वाले विचारकों के चेहरे पर पड़े मुखौटे को नोचता प्रतीत होता है। तत्कालीन यवनों, मुगलों, पठानों आदि ने किस प्रकार हिन्दू नारियों को नारकीय जीवन भोगने के लिए बाध्य किया उसका सम्पूर्ण इतिहास है गुरु–वाणी। गुरु नानक की वाणी जहाँ एक ओर आध्यात्मिक से सम्पृक्त होकर ब्रह्म की आराधना का सन्देश देती है, वहीं वह वाणी तत्कालीन शासकों की क्रूरता, बर्बरता, हिंसा, दमनकारी विध्वंसक नीतियों और साम्राज्यवादी घृणित सोच का प्रमाणपत्र भी है।

मुख्य शब्द – मुद्रा, अद्वैतवाद, कामिनी, भामिनी, औदात्य, सद्वृत्ति, संकीर्ण, संकुचित, आक्रान्ताओं, बर्बरता, सृजनात्मक, समन्वित, प्रणयानुभूति, जीवात्मा, जड़–चेतन, कुत्सित, निन्दित, घृणित, नारकीय, क्रूरता।

सिद्धों की माँस, मछली, मदिरा, मुद्रा और मैथुन की विकृत, निन्दित और व्यभिचार पर आधारित घृणास्पद साधना–पद्धति का विरोध करने के लिए शंकराचार्य के 'अद्वैतवाद' पर अवलम्बित सन्तों के काव्य में कहीं–कहीं नारी के कामिनी और भामिनी स्वरूप की निन्दा को हिन्दू धर्म–साधना के विरोधियों ने हिन्दू धर्म–साधना के औदात्य के विरुद्ध एक हथियार के रूप में प्रयोग किया, जबकि सत्य तो यह है कि हिन्दू धर्म विकृति का विनाश कर संस्कृति और सद्वृत्ति का प्रचार–प्रसार करने वाली व्यस्थित–सुचिन्तित योजना का नाम है। संकीर्ण, संकुचित और व्यावसायिक दृष्टि से अनुप्राणित नारी विमर्शकार भी 'नारी विमर्श' के नाम पर सम्पूर्ण नारी जाति के हितों के एकमात्र रक्षक और संरक्षक होने का ढोल पीट रहें हैं। ऐसे नारी विमर्शकार इस तथ्य को भली प्रकार अंगीकार करलें कि भारतीय धर्म–साधना में नारी तो शक्तिस्वरूपा है, सम्माननीय है और देवत्व के उच्च शिखर पर प्रतिष्ठित है। 'नारी विमर्श' से पूर्व ही नारी के समस्त गौरव की रक्षा के परम पुनीत दायित्व के लिए संत, कवि, साधक पहले से ही सचेत रहे हैं। नारी के औदात्य के सम्बन्ध में गुरु नानकदेव जी के विचारों पर विचार करना प्रासंगिक होगा।

महान् कवि अपनी सच्ची सार्थकता तभी अधिगत करता है जब वह अलौकिक, आध्यात्मिक चिन्तन के साथ–साथ लोक के सुधार की दिशा में प्रवृत्त होता है। लोक की विकृतियों पर प्रहार कर उनको समाप्त करके आस्तिकता, निष्ठा, सच्चाई, धर्म और संस्कृति की आधारशिला रखना ही कवि का गुरुतर उद्देश्य होता है। नारी–अस्मिता को स्वीकृति प्रदान करने वाले गुरु नानकदेव ने समाज में मुगलों, यवनों, पठानों आदि के द्वारा हो रहे नारी उत्पीड़न पर कठोर प्रहार किया है। गुरु नानक की दृष्टि व्यापक और चिन्तन गम्भीर था इसलिए उन्होंने मुगलों, यवनों, पठानों तथा ऐसे ही अन्य दुष्टों के द्वारा किये जा रहे बर्बर अत्याचारों से पीड़ित–प्रताड़ित हिन्दू नारियों के साथ–साथ मुसलमान नारियों के प्रति भी गहरी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हुए उनकी पीड़ा के साथ अद्वैत स्थापित किया। वे लिखते हैं, ''इन स्त्रियों में से कुछ हिन्दुवानियाँ, कुछ तुरकानियाँ, कुछ भाटिनें (भाटों की स्त्रियाँ) और कुछ ठकुरानियाँ थीं। इनमें से कुछ स्त्रियों के बुरके सिर तक पैर तक फाड़ दिये गये और कुछ हिन्दू स्त्रियों को शमशान में निवास मिला (अर्थात् मार डाली गयीं)। जिन (स्त्रियों) के पति घर नहीं लौटे (युद्ध में मार दिये गये या घायल हो गये) उन (बेचारियों) ने (अपनी) रातें किस प्रकार काटीं –

... इक हिंदवाणी अवर तुरकाणी भटिआणी ठकुराणी।

इकन्हा पेरण सिर खुर पाटे इकन्हा वासु मसाणी।।

जिन्ह के बंके घरी न आइआ तिन्ह किउ रैणि विहाणी।।[1]

यवनों, मुगलों, पठानों आदि अनेक बर्बर वंशों के देश पर आधिपत्य से सबसे अधिक कष्ट हिन्दू महिलाओं को झेलना पड़ा। हिन्दू धर्म–साध्नों पर कुठाराघात करने वाले यह भूल जाते हैं कि हमारे देश में परदा प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा, जौहर आदि का आगमन आततायी विदेशी आक्रान्ताओं से अपनी कन्याओं और महिलाओं को बचाने की निष्फल कोशिश के परिणामस्वरूप हुआ। आज भी विदेशी आयातित दर्शन से प्रभावित चिन्तक और संकीर्ण सोच के उन्नायक सामान्य जन की कोमल भावनाओं को भड़काकर उन्हें धर्म–विरुद्ध करने का षड्यन्त्र रचते रहते हैं। ऐसे चिन्तक गुरु नानकदेव की निम्न पंक्तियों पर ध्यान दें, ''जिन (हिन्दू स्त्रियों) के सिर पर माँग की पट्टी थी और उस माँग में (सौभाग्य चिह्न के रूप में) सिन्दूर डाला गया था (उनके) सिरों (केशराशि) को कैंची से मूँड दिया गया –

''जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूर।
ते सर काती सुंनीअन्हि गल विचि आवै धूड़ि।''[2]

मुसलमानों की क्रूरता, बर्बरता और पाश्विकता पर प्रकाश डालते हुए सन्त नानक लिखते हैं, ''धनु जोबुन दुइ वैरी होए''[3] अर्थात् हिन्दू स्त्रियों के लिए उनकी सम्पन्नता और यौवन दोनों वैरी हो गये।

संत गुरु नानकदेव ने नारी को विशेष महत्त्व प्रदान किया है। नानक ने नारी की विलक्षण सृजनात्मक शक्ति को स्वीकार करते हुए सभी प्रकार के सांसारिक सम्बन्धों में नारी की सत्ता और महत्ता को अंगीकार किया है। नानक लिखते हैं, ''स्त्री से ही मनुष्य जन्म लेता है। स्त्री के ही उदर में प्राणी का शरीर निर्मित होता है। स्त्री से ही सगाई और विवाह होता है। स्त्री के ही द्वारा अन्य लोगों से सम्बन्ध जुड़ता है और स्त्री से ही जगत् की उत्पत्ति का क्रम चलता है। एक स्त्री के मर जाने पर दूसरी स्त्री की खोज की जाती है। स्त्री ही हमें सामाजिक बन्धनों में रखती है। ऐसी परिस्थिति में उस स्त्री को बुरा क्यों कहा जाय, जिससे बड़े–बड़े राजागण जन्म लेते हैं? स्त्री से ही स्त्री उत्पन्न होती है। इस संसार में कोई भी प्राणी स्त्री के बिना नहीं उत्पन्न हो सकता।''[4]

नारी के प्रति आदर–भाव प्रखर कवि गुरु नानक जी की वाणी में सर्वत्र परिलक्षित होता है। सन्त साहित्य में 'ब्रह्म' को सर्वोपरि महत्त्व दिया गया है और 'आत्मा' को उसी का अंश बतलाया गया है। आत्मा और परमात्मा का मिलन ही 'अद्वैतवाद' है। इसी अद्वैतवाद में आत्मा की परमात्मा के प्रति प्रणयानुभूति को 'रहस्यवाद' कहा गया है। यहाँ यह विचारणीय है कि आत्मा की परमात्मा के प्रति प्रेमानुभूति जब लौकिक स्वरूप अधिगत करती है तो माधुर्यभाव की भक्ति की उत्पत्ति होती है जिसमें परमात्मा या ब्रह्म को 'पुरुष' और आत्मा को 'नारी' समझा जाता है। संत शिरोमणि गुरु नानकदेव का विचार इस सन्दर्भ में अधिक व्यापक है। उन्होंने परमब्रह्म को 'पुरुष' और 'नारी' के समन्वित स्तर पर प्रतिष्ठित कर अधिक व्यावहारिक और तार्किक स्वरूप प्रदान किया है –

''आपे पुरखु आपे ही नारी।''[5]

नारी को केन्द्र में रखकर सन्तप्रवर नानक ने अपने साहित्य में विलक्षण प्रयोग किये हैं जिससे उनके चिन्तन ने और अधिक भास्वरता अर्जित की। हिन्दू धर्म–साधना में स्थूल शरीर को जड़ और आत्मा को सत् माना गया है क्योंकि आत्मा परमात्मा का अंश है। जड़ शरीर की समाप्ति के बाद सत् आत्मा पुनः अपने अंशी के साथ एकाकार स्थापित कर लेती है। हमारी साधना–पद्धति में 'जड़' को भी उतना ही महत्त्व दिया गया है जितना की 'चेतन' को, क्योंकि जड़ को 'सजीव' होने के लिए चेतन की आवश्यकता होती है और चेतन को 'आकार' ग्रहण करके 'जीवन्त' होने के लिए जड़ की आवश्यकता होती है। जब जड़ या स्थूल समाप्त हो जाता है तो चेतन या सूक्ष्म भी लोक में अपनी सार्थकता खोकर ब्रह्म में लीन हो जाता है। संत नानक ने नया प्रयोग करते हुए शरीर को 'बहन' और जीवात्मा को 'भाई' बतलाया है और जीवात्मा रूपी भाई के अभाव में शरीर रूपी बहन विरहाग्नि में जल जाती है –

''बीरा बीरा करि रही बीर भए बैराइ।
बीर चले घरि आपणै बहिण बिरहि जलि जाइ।।''[6]

नारी की पति के प्रति अगाध–असीम च्रद्धा, निष्ठा, समर्पण, प्रेम को ध्यान में रखते हुए और उस पुनीत भाव के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए सन्त नानक कहते हैं कि जिस प्रकार स्त्री अपने पति के साथ

प्रेम करती है, उसी प्रकार शिष्य को भी अपने गुरु के शब्द में चित्त लगाना चाहिये –

''पिर सेती धनु प्रेमु रचाए।
गुर कै सवदि तथा चित् लाए।।''[7]

उपर्युक्त विवेचन के आलोक में हम कह सकते हैं कि गुरु नानकदेव जी महान् सन्त और विचारक थे। उनका समस्त साहित्य समाज को विकृतियों से विमुख कर संस्कृति के उदात्त शिखर पर प्रतिष्ठित करने की अदम्य शक्ति का संवाहक है। नारी के प्रति उनका सम्मान समकालीन कुत्सित, निन्दित, घृणित, संकीर्ण सोच वाले विचारकों के चेहरे पर पड़े मुखौटे को नोचता प्रतीत होता है। तत्कालीन यवनों, मुगलों, पठानों आदि ने किस प्रकार हिन्दू नारियों को नारकीय जीवन भोगने के लिए बाध्य किया उसका सम्पूर्ण इतिहास है गुरु–वाणी। गुरु नानक की वाणी जहाँ एक ओर आध्यात्मिक से सम्पृक्त होकर ब्रह्म की आराधना का सन्देश देती है, वहीं वह वाणी तत्कालीन शासकों की क्रूरता, बर्बरता, हिंसा, दमनकारी विध्वंसक नीतियों और साम्राज्यवादी घृणित सोच का प्रमाणपत्र भी है।

---

1 डॉ० जयराम मिश्र, नानक वाणी, पृ० 294
2 वही, पृ० 292
3 वही, पृ० 292
4 वही, पृ० 10, 352
5 वही, पृ० 606
6 वही, पृ० 532
7 वही, पृ० 584

प्रो० संजीव कुमार, हिन्दी–विभाग
निदेशकः संत साहित्य शोध पीठ, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक